



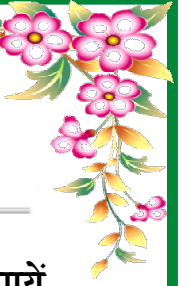
मधुबन

ओम् शान्ति

अंक 398 सितम्बर 2025



पत्र-पुष्प



निमित्त टीचर्स तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई-बहनों प्रति बापदादा व दीदियों की शुभ प्रेरणाये

(याद पत्र 24-8-2025)

“संगठित रूप में योग को ज्वाला रूप बनाओ, चैतन्य लाइट हाउस बनो”

प्राणप्यारे अव्यक्त बापदादा के अति स्नेही, सदा तीव्र पुरुषार्थ की लगन को अग्नि रूप बनाने वाले, श्रेष्ठ तपस्वी आत्मायें, अपनी शुभ वृत्तियों से प्रकृति का भी परिवर्तन करने वाले चैतन्य लाइट हाउस निमित्त टीचर्स बहिनें, देश विदेश के सभी ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

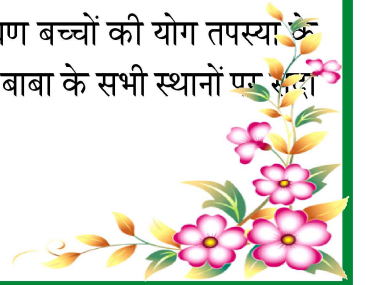
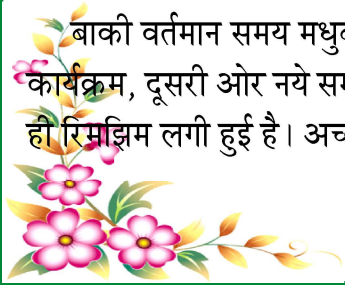
ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - वर्तमान समय प्रकृति की हलचल और माया के बहुरूपों से स्वयं को सेफ रखने तथा इस कलियुगी तमोप्रधान जड़जड़ीभूत पुराने वृक्ष को परिवर्तन करने के लिए मीठे बापदादा का विशेष इशारा है कि बच्चे अब संगठित रूप में फुलफोर्स से योग ज्वाला प्रज्ज्वलित करो, इसके लिए याद का लिंक सदा जुटा रहे। अब मन को ऐसा पावरफुल बनाओ जो सेकण्ड में जहाँ चाहे वहाँ पहुँच जाए। अभ्यास करो अभी-अभी साकार वतन में, अभी-अभी परमधाम में... समय प्रमाण अभी सर्व ब्राह्मण आत्माओं को समीप लाते हुए ज्वाला स्वरूप का वायुमण्डल बनाने की सेवा करो, इसके लिए चाहे भट्टियां करो या आपस में संगठित होकर रूहरिहान करो लेकिन ज्वाला स्वरूप का अनुभव करो और कराओ, इस सेवा में लग जाओ तो छोटी-छोटी बातें सहज परिवर्तन हो जायेंगी। योग को ज्वाला रूप बनाने के लिए सेकण्ड में बिन्दी स्वरूप बन मन-बुद्धि को एकाग्र करने का अभ्यास बार-बार करना है। स्टॉप कहें और सेकण्ड में व्यर्थ देह-भान से मन-बुद्धि एकाग्र हो जाए। जब योग में और सब संकल्प शान्त हो जाते हैं, एक ही संकल्प रहता “बाप और मैं” तब योग पावरफुल होता है।

बाबा कहते बच्चे, अभी ऐसे ज्वालामुखी बनो जो आसुरी संस्कार, आसुरी स्वभाव सब भस्म हो जाएं। जैसे दुःखी आत्माओं के मन में यह आवाज शुरू हुआ है कि अब विनाश हो, वैसे ही आप विश्व-कल्याणकारी आत्माओं के मन में यह संकल्प उत्पन्न हो कि अब जल्दी ही सर्व का कल्याण हो तब ही समाप्ति होगी। अब अपने मास्टर सर्वशक्तिवान् की स्टेज से शक्तियों व विशेषताओं रुपी किरणें चारों ओर फैलती हुई अनुभव करो, “मैं मास्टर सर्वशक्तिवान्, विघ्न-विनाशक आत्मा हूँ”, इस स्वमान के स्मृति की सीट पर स्थित रहेंगे तो कोई भी विघ्न सामने भी नहीं आयेगा। अब ज्वाला-रूप बनने का दृढ़ संकल्प लो और संगठित रूप में मन-बुद्धि की एकाग्रता द्वारा पावरफुल योग के वायब्रेशन चारों ओर फैलाओ।

बोलो, ऐसी पावरफुल योग तपस्या कर रहे हो ना! विशेष अमृतवेले के वरदानी समय में सर्व वरदानों से अपनी झोली भरनी है फिर कर्म में कर्मयोगी बन कर्म करते बीच-बीच में अशरीरी स्थिति का अनुभव करना है और नुमाशाम के समय विशेष पावरफुल ज्वाला स्वरूप योग द्वारा स्वयं के पुराने संस्कारों को भस्म करते हुए प्रकृति सहित सर्व आत्माओं को सकाश देने की सेवा करनी है। चैतन्य लाइट हाउस बन सर्वलाइट दे सबको भटकने से छुड़ाना है।

बाकी वर्तमान समय मधुबन के सभी स्थानों पर डबल सेवायें चलती रहती हैं। एक ओर ब्राह्मण बच्चों की योग तपस्या के कार्यक्रम, दूसरी ओर नये सम्बन्ध सम्पर्क वालों के लिए सम्मेलन, योग शिविर आदि चल रहे हैं। बाबा के सभी स्थानों पर सेवा ही रिमझिम लगी हुई है। अच्छा - सभी को याद... ओम् शान्ति।





ये अव्यक्त इशारे



अब लगन की अग्नि को प्रज्वलित कर योग को ज्वाला रूप बनाओ

1) बापदादा बच्चों को विशेष इशारा दे रहे हैं - बच्चे अब तीव्र पुरुषार्थ की लगन को अग्नि रूप में लाओ, ज्वालामुखी बनो। जो भी मन के, सम्बन्ध-सम्पर्क के हिसाब-किताब रहे हुए हैं - उन्हें ज्वाला स्वरूप की याद से भस्म करो।

2) पावरफुल योग अर्थात् लगन की अग्नि, ज्वाला रूप की याद ही भ्रष्टाचार, अत्याचार की अग्नि को समाप्त करेगी और सर्व आत्माओं को सहयोग देगी, इससे ही बेहद की वैराग्य वृत्ति प्रज्वलित होगी। याद की अग्नि एक तरफ उस अग्नि को समाप्त करेगी, दूसरी तरफ आत्माओं को परमात्म सन्देश की, शीतल स्वरूप की अनुभूति करायेगी, इससे ही आत्मायें पापों की आग से मुक्त हो सकेंगी।

3) समय प्रमाण अब सर्व ब्राह्मण आत्माओं को समीप लाते हुए ज्वाला स्वरूप का वायुमण्डल बनाने की सेवा करो, उसके लिए चाहे भट्टियां करो या आपस में संगठित होकर रूहरिहान करो लेकिन ज्वाला स्वरूप का अनुभव करो और कराओ, इस सेवा में लग जाओ तो छोटी-छोटी बातें सहज परिवर्तन हो जायेंगी।

4) योग को ज्वाला रूप बनाने के लिए सेकण्ड में बिन्दी स्वरूप बन मन-बुद्धि को एकाग्र करने का अभ्यास बार-बार करो। स्टॉप कहा और सेकण्ड में व्यर्थ देह-भान से मन-बुद्धि एकाग्र हो जाए। ऐसी कन्ट्रोलिंग पावर सारे दिन में यूज करो। पावरफुल ब्रेक द्वारा मन-बुद्धि को कन्ट्रोल करो, जहाँ मन-बुद्धि को लगाना चाहो वहाँ सेकण्ड में लग जाए।

5) योग माना शान्ति की शक्ति। यह शान्ति की शक्ति बहुत सहज स्व को और दूसरों को परिवर्तन करती है, इससे व्यक्ति भी बदल जायेंगे तो प्रकृति भी बदल जायेगी। व्यक्तियों को तो मुख का कोर्स करा लेते हो लेकिन प्रकृति को बदलने के लिए शान्ति की शक्ति अर्थात् योगबल ही चाहिए।

6) योग में जब और सब संकल्प शान्त हो जाते हैं, एक ही संकल्प रहता “बाप और मैं” इसी को ही पावरफुल योग कहते हैं। बाप के मिलन की अनुभूति के सिवाए और सब संकल्प समा जायें तब कहेंगे ज्वाला रूप की याद, जिससे परिवर्तन होता है।

7) जब योग में बैठते हो तो समाने की शक्ति सेकण्ड में यूज करो। सेवा के संकल्प भी समा जाएं इतनी शक्ति हो जो स्टॉप कहा और स्टॉप हो जाए। फुल ब्रेक लगे, ढीली ब्रेक नहीं। अगर एक सेकण्ड के बजाए ज्यादा समय लग जाता है तो समाने की शक्ति कमजोर कहेंगे।

8) इस कलियुगी तमोप्रधान जड़जड़ीभूत पुराने वृक्ष को भस्म करने के लिए संगठित रूप में फुलफोर्स से योग ज्वाला प्रज्वलित करो लेकिन ऐसी ज्वाला स्वरूप की याद तब रहेगी जब याद का लिंक सदा जुटा रहेगा। अगर बार-बार लिंक टूटता है, तो उसे जोड़ने में समय भी लगता, मेहनत भी लगती और शक्तिशाली के बजाए कमजोर हो जाते हो।

9) पावरफुल मन की निशानी है - सेकण्ड में जहाँ चाहे वहाँ पहुंच जाए। मन को जब उड़ना आ गया, प्रैक्टिस हो गई तो सेकण्ड में जहाँ चाहे वहाँ पहुंच सकता है। अभी-अभी साकार वतन में, अभी-अभी परमधाम में, सेकण्ड की रफ्तार है - अब इसी अभ्यास को बढ़ाओ।

10) पावरफुल याद के लिए सच्चे दिल का प्यार चाहिए। सच्ची दिल वाले सेकण्ड में बिन्दु बन बिन्दु स्वरूप बाप को याद कर सकते हैं। सच्ची दिल वाले सच्चे साहेब को राज़ी करने के कारण, बाप की विशेष दुआयें प्राप्त करते हैं, जिससे सहज ही एक संकल्प में स्थित हो ज्वाला रूप की याद का अनुभव कर सकते हैं, पावरफुल वायब्रेशन फैला सकते हैं।

11) योग में सदा लाइट हाउस और माइट हाउस की स्थिति का अनुभव करो। ज्ञान है लाइट और योग है माइट। ज्ञान और योग - दोनों शक्तियां लाइट और माइट सम्पन्न हों - इसको कहते हैं मास्टर सर्वशक्तिमान। ऐसी शक्तिशाली आत्मायें किसी भी परिस्थिति को सेकण्ड में पार कर लेती हैं।

12) ज्वाला स्वरूप की स्थिति का अनुभव करने के लिए निरन्तर याद की ज्वाला प्रज्वलित रहे। इसकी सहज विधि है - सदा अपने को “सारथी” और “साक्षी” समझकर चलो। आत्मा इस रथ की सारथी है - यह स्मृति स्वतः ही इस रथ (देह) से वा किसी भी प्रकार के देहभान से न्यारा बना देती है। स्वयं को सारथी समझने से सर्व कर्मेन्द्रियाँ अपने कन्ट्रोल में रहती हैं। सूक्ष्म शक्तियां “मन-बुद्धि-संस्कार” भी ऑर्डर प्रमाण रहते हैं।

13) सारथी अर्थात् आत्म-अभिमानि क्योंकि आत्मा ही सारथी है। ब्रह्मा बाप ने इस विधि से नम्बरवन की सिद्धि प्राप्त की, तो फॉलो फॉदर करो। जैसे बाप देह को अधीन कर प्रवेश होते अर्थात् सारथी बनते हैं देह के अधीन नहीं होते, इसलिए न्यारे और प्यारे हैं। ऐसे ही आप सभी ब्राह्मण आत्माएं भी बाप समान सारथी की स्थिति में रहो। सारथी स्वतः ही साक्षी हो कुछ भी करेंगे, देखेंगे, सुनेंगे और सब-कुछ करते भी माया की लेप-छेप से निर्लेप रहेंगे।

14) कई बच्चे कहते हैं कि जब योग में बैठते हैं तो आत्म-अभिमानि होने के बदले सेवा याद आती है। लेकिन ऐसा नहीं होना चाहिए क्योंकि लास्ट समय अगर अशरीरी बनने की बजाए सेवा का भी संकल्प चला तो सेकण्ड के पेपर में फेल हो जायेंगे। उस समय सिवाय बाप के, निराकारी, निर्विकारी, निरहंकारी - और कुछ याद नहीं। सेवा में फिर भी साकार में आ जायेंगे इसलिए जिस समय जो चाहे वह स्थिति हो, नहीं तो धोखा मिल जायेगा।

15) आप बच्चों के पास पवित्रता की जो महान शक्ति है, यह श्रेष्ठ शक्ति ही अग्नि का काम करती है जो सेकण्ड में विश्व के किचड़े को भस्म कर सकती है। जब आत्मा पवित्रता की सम्पूर्ण स्थिति में स्थित होती है तो उस स्थिति

के श्रेष्ठ संकल्प से लगन की अग्नि प्रज्वलित होती है और किचड़ा भस्म हो जाता है, वास्तव में यही योग ज्वाला है। अभी आप बच्चे अपनी इस श्रेष्ठ शक्ति को कार्य में लगाओ।

16) तपस्वी मूर्त का अर्थ है - तपस्या द्वारा शान्ति के शक्ति की किरणें चारों ओर फैलती हुई अनुभव में आये। यह तपस्वी स्वरूप औरों को देने का स्वरूप है। जैसे सूर्य विश्व को रोशनी की और अनेक विनाशी प्राप्ति की अनुभूति कराता है। ऐसे महान तपस्वी आत्मायें ज्वाला रूप शक्तिशाली याद द्वारा प्राप्ति के किरणों की अनुभूति कराती हैं।

17) अभी ज्वालामुखी बन आसुरी संस्कार, आसुरी स्वभाव सब-कुछ भस्म करो। जैसे देवियों के यादगार में दिखाते हैं कि ज्वाला से असुरों का संघार किया। असुर कोई व्यक्ति नहीं लेकिन आसुरी शक्तियों को खत्म किया। यह अभी आपकी ज्वाला-स्वरूप स्थिति का यादगार है। अब ऐसी योग की ज्वाला प्रज्वलित करो जिसमें यह कलियुगी संसार जलकर भस्म हो जाये।

18) जैसे दुःखी आत्माओं के मन में यह आवाज शुरू हुआ है कि अब विनाश हो, वैसे ही आप विश्व-कल्याणकारी आत्माओं के मन में यह संकल्प उत्पन्न हो कि अब जल्दी ही सर्व का कल्याण हो तब ही समाप्ति होगी। विनाशकारियों को कल्याणकारी आत्माओं के संकल्प का इशारा चाहिये इसलिए अपने एवर-रेडी बनने के पॉवरफुल संकल्प से ज्वाला रूप योग द्वारा विनाश ज्वाला को तेज करो।

19) जैसे सूर्य की किरणें फैलती हैं, वैसे ही मास्टर सर्वशक्तिवान् की स्टेज पर शक्तियों व विशेषताओं रूपी किरणें चारों ओर फैलती अनुभव करें, इसके लिए “मैं मास्टर सर्वशक्तिवान्, विघ्न-विनाशक आत्मा हूँ”, इस स्वमान के स्मृति की सीट पर स्थित होकर कार्य करो तो विघ्न सामने तक भी नहीं आयेंगे।

20) जब तक आपकी याद ज्वाला रूप नहीं बनी है तब तक यह विनाश की ज्वाला भी सम्पूर्ण ज्वाला रूप नहीं लेती है। यह भड़कती है, फिर शीतल हो जाती है क्योंकि

ज्वाला मूर्त और प्रेरक आधार-मूर्त आत्मायें अभी स्वयं ही सदा ज्वाला रूप नहीं बनी हैं। अब ज्वाला-रूप बनने का दृढ़ संकल्प लो और संगठित रूप में मन-बुद्धि की एकाग्रता द्वारा पावरफुल योग के वायब्रेशन चारों ओर फैलाओ।

21) ज्वाला-रूप बनने के लिए यही धुन सदा रहे कि अब वापिस घर जाना है। जाना है अर्थात् उपराम। जब अपने निराकारी घर जाना है तो वैसा अपना वेष बनाना है। तो जाना है और सबको वापस ले जाना है - इस स्मृति से स्वतः ही सर्व-सम्बन्ध, सर्व प्रकृति के आकर्षण से उपराम अर्थात् साक्षी बन जायेंगे। साक्षी बनने से सहज ही बाप के साथी व बाप-समान बन जायेंगे।

22) जितना स्थापना के निमित्त बने हुए ज्वाला-रूप होंगे उतना ही विनाश-ज्वाला प्रत्यक्ष होगी। संगठन रूप में ज्वाला-रूप की याद विश्व के विनाश का कार्य सम्पन्न करेगी, इसके लिए हर सेवाकेन्द्र पर विशेष योग के प्रोग्राम चलते रहें तो विनाश ज्वाला को पंखा लगेगा। योग-अग्नि से विनाश की अग्नि जलेगी, ज्वाला से ज्वाला प्रज्ज्वलित होगी।

23) लास्ट सो फास्ट पुरुषार्थ ज्वाला-रूप का ही रहा हुआ है। पाण्डवों के कारण यादव रुके हुए हैं। पाण्डवों की श्रेष्ठ शान, रुहानी शान की स्थिति यादवों के परेशानी वाली परिस्थिति को समाप्त करेगी। तो अपनी शान से परेशान आत्माओं को शान्ति और चैन का वरदान दो। ज्वाला स्वरूप अर्थात् लाइट हाउस और माइट हाउस स्थिति को समझते हुए इसी पुरुषार्थ में रहो।

24) विशेष याद की यात्रा को पावरफुल बनाओ, ज्ञान-स्वरूप के अनुभवी बनो। आप श्रेष्ठ आत्माओं की शुभ वृत्ति व कल्याण की वृत्ति और शक्तिशाली वातावरण अनेक तड़पती हुई, भटकती हुई, पुकार करने वाली आत्माओं को आनन्द, शान्ति और शक्ति की अनुभूति करायेगी।

25) जैसे अग्नि में कोई भी चीज़ डालो तो नाम, रूप, गुण सब बदल जाता है, ऐसे जब बाप के याद के लगन की अग्नि में पड़ते हो तो परिवर्तन हो जाते हो। मनुष्य से ब्राह्मण

बन जाते, फिर ब्राह्मण से फरिश्ता सो देवता बन जाते। लगन की अग्नि से ऐसा परिवर्तन होता है जो अपनापन कुछ भी नहीं रहता, इसलिए याद को ही ज्वाला रूप कहा है।

26) अभी अच्छा-अच्छा कहते हैं, लेकिन अच्छा बनना है यह प्रेरणा नहीं मिल रही है। उसका एक ही साधन है - संगठित रूप में ज्वाला स्वरूप बनो। एक एक चैतन्य लाइट हाउस बनो। सेवाधारी हो, स्नेही हो, एक बल एक भरोसे वाले हो, यह तो सब ठीक है, लेकिन मास्टर सर्वशक्तिवान की स्टेज, स्टेज पर आ जाए तो सब आपके आगे परवाने के समान चक्र लगाने लगेंगे।

27) जैसे किला बांधा जाता है, जिससे प्रजा किले के अन्दर सेफ रहे। एक राजा के लिए कोठरी नहीं बनाते, किला बनाते हैं। आप सभी भी स्वयं के लिए, साथियों के लिए, अन्य आत्माओं के लिए ज्वाला रूप याद का किला बांधो। याद के शक्ति की ज्वाला हो तो हर आत्मा सेफ्टी का अनुभव करेगी।

28) पाप कटेश्वर वा पाप हरनी तब बन सकते हो जब याद ज्वाला स्वरूप होगी। इसी याद द्वारा अनेक आत्माओं की निर्बलता दूर होगी, इसके लिए हर सेकण्ड, हर श्वास बाप और आप कम्बाइन्ड होकर रहो। कोई भी समय साधारण याद न हो। स्नेह और शक्ति दोनों रूप कम्बाइन्ड हो।

29) अभी निर्भय ज्वालामुखी बन प्रकृति और आत्माओं के अन्दर जो तमोगुण है उसे भस्म करो। तपस्या अर्थात् ज्वाला स्वरूप याद, इस याद द्वारा ही माया वा प्रकृति का विकराल रूप शीतल हो जायेगा। आपका तीसरा नेत्र, ज्वालामुखी नेत्र माया को शक्तिहीन कर देगा।

30) ज्वाला स्वरूप याद के लिए मन और बुद्धि दोनों को एक तो पावरफुल ब्रेक चाहिए और मोड़ने की भी शक्ति चाहिए। इससे बुद्धि की शक्ति वा कोई भी एनर्जी वेस्ट ना होकर जमा होती जायेगी। जितनी जमा होगी उतना ही परखने की, निर्णय करने की शक्ति बढ़ेगी। इसके लिए अब संकल्पों का बिस्तर बन्द करते चलो अर्थात् समेटने की शक्ति धारण करो।

(त्रिमूर्ति दादियों द्वारा मिली हुई अनमोल शिक्षायें)

शिवबाबा याद है ?

ओम् शान्ति

मधुबन

गुल्जार दादी जी की अनमोल शिक्षायें

“संगमयुग पर बाबा ने अनेकानेक झूले दिये हैं, उन्हीं झूलों में सदा झूलते रहो तो मनोरंजन का अनुभव करेंगे, मेहनत नहीं लगेगी”

(21-03-10)

हम एक एक बच्चे से बाबा का प्यार कितना है! और उस प्यार ने सहज अपना बना दिया। मेरा बाबा जो है ही मेरा तो उस मेरे को याद करना बहुत सहज होता है। सारा दिन देखो मेरा ही याद आता है, तो हमारा पहले कौन? मेरा बाबा। दिल से कहो मेरा बाबा, वाह बाबा वाह! और बाबा का गीत है “मेरे मीठे बच्चे, वाह मेरे बच्चे!” तो बाबा से जितना ही प्यार है उतना ही बाबा का प्यार तो अविनाशी सदाकाल का है ही। लेकिन अभी बाबा इशारे क्या दे रहा है, वर्तमान समय बाबा का यही इशारे हैं कि बस, बाबा समान बन जायें। हर एक मेरा बच्चा कर्मन्द्रियों को जीतने वाले, मन-बुद्धि-संस्कार को जीतने वाले विजयी बच्चे बन जायें।

बाबा कहते हैं आपकी बुद्धि में रहे - विजय जन्म सिद्ध अधिकार है। यह नशा रहना चाहिए। होगी या नहीं होगी, पुरुषार्थ तो कर रहे है, हो जायेगी करके बाबा को दिलासा देते, अपने को धोखे में नहीं रखना चाहिए। बाबा कहते हैं एवररेडी, समझो अभी अभी विनाश हो जाये तो सब विजयी हो जायें,

युद्ध नहीं करनी पड़े, युद्ध करने में तो लवलीन स्थिति की अवस्था का अनुभव नहीं होगा। बाबा कहता है बस, सदा लवलीन रहो यानि लव में लीन रहो। बच्चे कहते हैं बाबा सारा दिन क्या करें? बाबा ने कहा, मैंने तुमको इतने झूले बनाके दिये हैं, कभी ज्ञान के झूले में झूलो, कभी प्रेम के झूले में झूलो, कभी शक्तियों के झूले में झूलो। एक झूले से दूसरे, दूसरे से तीसरे झूले में जाओ। सदा झूले में झूलते रहो, बाबा से प्राप्त खज़ानों से खेलो, वतन में आओ या बाबा से रूह्ररूहान करो, इतने काम है इसी में बिजी रहो तो मोहब्बत में मेहनत नहीं लगेगी, मनोरंजन में रहेंगे। यही हम एक एक बच्चों के प्रति बाबा की आशाएँ हैं। तो ऐसे बाबा की आशाओं को पूर्ण करने वाले सभी आशाओं के तारे हैं या उम्मीदों के सितारे हैं? जब बाबा हमारे साथ है तो सब सहज हो ही जायेगा। और इस आश को पूर्ण करने से ही सब खुश रहके खुशी बांटें तो खुशी बढ़ती रहेगी। अच्छा।

गुल्जार दादी जी का दूसरा क्लास

“मन के मालिक बन मन को चलाओ, मन्सा सेवा करो, साथ-साथ सबको सन्देश देकर मुक्ति का वर्सा दिलाओ”

(05-06-10)

आजकल बाबा मन के ऊपर विशेष अटेंशन दिला रहा है, मन को बिजी रखो, इसके लिए बाबा कहते हैं मन्सा सेवा करो। कर्म करते हुए भी ऐसा कोई हल्का काम होता है तो आप मन्सा सेवा कर सकते हैं क्योंकि मनमनाभव की ही मुख्य बात है। तो एक मन्सा सेवा में बिजी रहो, दूसरा बाबा कहते हैं सन्देश देने में बिजी रहो। इससे कोई भी धर्म की आत्मायें हैं, उनको लगेगा कि यह हमारे हैं। सबको मुक्ति तो मिलनी ही है। तो मुक्ति प्राप्त करने वाले भी बाबा से ही तो वर्सा लेंगे। बाबा दिलायेंगे तो हमारे द्वारा ही ना। तो यह वर्सा सभी को दिलाओ, नहीं तो आपको उल्हना मिलेगा। कई बच्चे समझते हैं अभी विनाश की डेट तो कोई जल्दी दिखाई नहीं देती है। लेकिन सन्देश दे तो रहे हैं, देते रहेंगे। अगर पीछे सन्देश देंगे तो वो आपको कहेंगे कि आपने हमारे को बहुत धोखा दिया, क्योंकि हमको अगर आप पहले

बताते तो हम भी कुछ पद तो पा लेते। लेकिन आपने अभी ऐसे टाइम पर बताया है जो अहो! प्रभु आपकी लीला अपरम्पार... तो आपको उल्हना मिलेगा इसीलिए बाबा कहते हैं अभी जल्दी-जल्दी सबको मुक्ति का वर्सा दिलाओ, कोई का उल्हना न रह जाये। तो बाबा चाहता है, कि बच्चे अभी मन के मालिक बन करके मन को चलायें। कितना समय मेरा मन आर्डर मानता है, कितना समय नहीं मानता है? अगर नहीं मानता है तो मालिक कमजोर हुआ इसलिए हम सभी इकट्ठे हुए हैं। तो सभी एक तो दृढ़ संकल्प करो दूसरा सभी अपने ऊपर भी अटेंशन रखो कोई भी पेपर आवे, उसमें भी सदा खुश। बाबा यही चाहता है कि हरेक बच्चा बेफिकर रहे। बाबा के दिलतख्तानशीन आत्मा हूँ, इस नशे में रहे। अच्छा।

“अपने संकल्पों को शुद्ध शान्त रखना, समय, श्वांस, संकल्प को सफल करना ही मेडिटेशन है”

(04-10-06)

ओम् शान्ति, गुडमॉर्निंग। मुरली सुनते या सुनाते हरेक को अन्दर चलता होगा कि आज मुरली से मुझे क्या मिला! बाबा कहते जैसे गऊ खाना खाती है फिर सारा दिन चबाती रहती है, तो उसका दूध बनता है। मनुष्य केवल खाते समय चबाते हैं, बाकी सारा दिन क्या करते हैं! हमें जो इतना भारी खजाना मिलता है, खाना भी मिलता है तो खजाना भी मिलता है। इस खजाने से कमाई कितनी है, खुशी कितनी है।

पढ़ाई अच्छी पढ़ने वाले का ध्यान रहता है प्रालब्ध के लिए। लौकिक दुनिया में जो पढ़ते हैं, वो समझते हैं पढ़ना ही है, नहीं तो जियेंगे कैसे। दुनिया को दिखाने के लिए पढ़ते हैं। हम भविष्य दुनिया की प्रालब्ध के लिए पढ़ते हैं। पढ़ाई ऐसी है जो इसमें पुस्तक उठाने की भी जरूरत नहीं है। मुरली एक बारी पढ़ो या 10 बारी पढ़ो, पर मनमनाभव के मंत्र को समझ लो। गीता में भी भगवान समझा-समझा के कहता है मनमनाभव। ज्ञान, भक्ति, वैराग्य। ज्ञान जो संगम पर मिला वो सतयुग त्रेता में काम आता है। वहाँ कोई ज्ञान लेना देना नहीं है, पर काम आता है। अभी भगवान का दिया हुआ जो ज्ञान है उसे याद रखना है। भगवान के दिये हुए ज्ञान में ताकत है, न पास्ट याद आये, न प्रेजेन्ट में बिना काम वाली बात याद आये। अगर पास्ट इज़ पास्ट नहीं कर सकते तो याद नहीं रह सकती। पास्ट इज़ पास्ट करते हैं तो पास हो जाते हैं।

बाबा ने कहा हियर नो इविल, भक्ति मार्ग की भी बातें नहीं सुनो। हमारी जीवन जब परिवर्तन होती है, शूद्र से ब्राह्मण बनते हैं। ब्राह्मण कैसे बन गये! सिर्फ बाबा को देखा, ज्ञान सुना, परिवार को देखा, बस ऐसे ब्राह्मण बन गये। किसी ने जबरदस्ती नहीं किया। ब्राह्मण जीवन में कितनी अच्छी-अच्छी बातें देख कर मोहित हुए हैं, ज्ञान तो पीछे सुना है। तो अन्दर में याद रखो कि हम ब्राह्मण बने क्यों? जीवन अच्छी है, परिवार साथी है, भगवान साथी है, यह सब देखकर ब्राह्मण बने हैं। इस परिवार की अच्छी-अच्छी बातें याद कर लो तो नष्टोमोहा बन जायेंगे।

हनुमान की लगन कैसी दिखाई हुई है, दिखाते हैं चोट लगी हनुमान को तो दर्द हुआ राम को। यह बाबा की प्रैक्टिकल हिस्ट्री है। एक बार मैं पूना में हॉस्पिटल में थी, मुझे जब भी डॉक्टर हाथ

लगाता था तो बाबा को शॉक लगता था, शक्ल पीली होती जाती थी। किसी ने पूछा तो कहा जनक का दर्द पी रहा हूँ, मैं आराम से थी। वण्डर है इतना उसका प्यार है। जो थोड़ा भी बाबा को प्यार करते हैं बाबा उन्हें कितना प्यार करता है। उसका शुक्रिया मानो तो कितना प्यार करेगा। कितना हमको शान्ति और खुशी का जी भरके खजाना दिया है।

जहाँ भी कदम हैं वहाँ सेवा है, मैं कभी नहीं कहेंगी हॉस्पिटल में हूँ। डॉक्टर को कभी ऐसा पेशेन्ट तो देखने को मिले, नर्सस को ऐसे पेशेन्ट तो मिलें जो कभी कम्पलेन न करें। क्या बड़ी बात है! बाबा कहता है पुराने कपड़े को सम्भाल के रखना है। साफ भी रखना है, इतना अक्ल सिखा रहा है। अक्लमंद वो है जो नकल करना जानता है। बाबा को कापी करके अर्थात् उसकी नकल करके दिखाये। तभी अंगद जैसी अडोल अवस्था बनेगी।

बाबा की याद इतना मीठा बनाती है, किसकी याद में बैठे हैं। मेडिटेशन है क्या! न माला है, न मंत्र है। एक अक्ल है नकल करने का, दूसरा जो इलम पढ़ा है उसे अमल में लाना है। मेडिटेशन क्या है, अपने संकल्प को शुद्ध शान्त रखना।

जो कहते हैं पुरुषार्थ के लिए टाइम नहीं है, वह अपने को ठगते हैं। पुरुषार्थ है क्या! अन्दर से मन को व्यर्थ से फ्री करना। अन्दर व्यर्थ में जो टाइम गंवा रहे हैं उसमें कितना नुकसान है फिर कहते हैं टाइम नहीं है। व्यर्थ में टाइम नष्ट हो रहा है। श्रेष्ठ संकल्प हों तो टाइम भी बड़ी अच्छी शक्ति देता है। मेडिटेशन क्या है? सिर्फ हमारा समय, श्वांस, संकल्प तीनों सफल हों। पुरुषार्थ में भविष्य अच्छा नज़र आता है, पास्ट खत्म हो जाता है। शक्ति आ जाती है। पास्ट का कोई भी स्वभाव-संस्कार है तो वो शक्ति छीन लेता है।

हिम्मत है तो बाबा की मदद है। ऐसे नहीं मेरे से नहीं होगा, अरे शान्त कर ना। शान्त करना भी नहीं सीखते हैं। हमें शान्त रहना भी सीखना होगा। यही है गुप्त सच्चे पुरुषार्थ की लगन। क्या अपने मन को शान्त कर लोरी सुनाना नहीं आता है, प्रेम से मुस्कराकर बाबा से बातें करके मन को सुलाना नहीं आता है! दिन में कुछ भी हुआ, चलो बाबा से गुडनाइट तो करके सोने जाओ। फिर रात में स्वप्नों में भी बाबा आयेगा। तो याद को

परिपक्व बनाने के लिए बड़े सहज तरीके हैं। अपने को आत्मा समझ के चलना, जब तक शरीर समझ के चलते हैं, तो बाबा साथ नहीं देता है। फिर अकेले रोना पीटना पड़ता है। बाबा का बच्चा हूँ तो बाबा के साथ रहूँ, बाबा हमारे आगे भी है, आगे

रास्ता क्लियर कर रहा है, फिर पीछे से मेरा बैकबोन बनकर गाइड कर रहा है। ऐसे बाबा को साथी बनाना, यह है सफलता का सितारा बनना। अच्छा।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृत वचन
“बेफिक्र बेगमपुर के बादशाह की श्रेष्ठ स्थिति”
(दादी जी का पर्सनल अनुभव)

(1989)

1) कई लोग मेरे से यह सवाल पूछते हैं कि दादी आपको कोई फ़िकर होता है? क्योंकि जानते तो हैं कि आखिर इतने बड़े कार्य-व्यवहार की कई बातें होती हैं। रोज़ की अनेक बातें हर मिनट में आती जाती हैं। कई बार तो एक में दूसरी, दूसरी में तीसरी बात आती तो फ़िकर तो रहना चाहिए ना! परन्तु बाबा का मुझे यह सचमुच पर्सनल वरदान है कि हमें न कोई भी फ़िकर होता, न कोई चिन्ता होती, न कोई चिन्तन चलता – इसका कारण है कि हम निमित्त हैं। फ़िकरात करने वाला करे, मैं क्यों करूँ? मेरी कोई रचना है क्या जो मैं फ़िकर करूँ! तेरी रचना है तू उनका फ़िकर करो, मुझे आप कहते हो कि यह कार्य करो तो मैं करती हूँ। तू कराने वाला है, हम निमित्त हैं। अच्छा है तो भी आप बैठे हो, रांग हुआ तो भी आप जवाबदार हो? तो फ़िकरात किसकी? कोई बात है प्लान करो, राय करो – कैसे करें, क्या करें लेकिन चिन्ता किस चीज़ की! चिन्ता चिता के बराबर है। हम कभी चिन्ता करते नहीं। आप लोगों ने कभी देखा है? फ़िकर से फारिग कींदा स्वामी सद्गुरु। तो फ़िकर वह करे, हम क्यों करें।

2) आप सभी बापदादा के दिलतख़्त पर बैठ जाओ तो किसी चीज़ का फ़िकर नहीं होगा। जो खिलावे वो खाना है, जो पहनावे वो पहनना है, अगर उसे हमें बेगरी पार्ट में रखना होगा तो भी हम उसमें राज़ी, अगर हमें राजकुमारों की तरह पालेंगे तो भी राज़ी हैं। बाकी किस चीज़ की चिन्ता! बाबा कहता है सर्विस करो, हम कहते हैं हाँ जी। आप करावनहार हैं, जो भी करायें हम सदा तैयार हैं।

3) हम सबका एक ही मन्त्र है – जी हज़ूर हम हाज़िर हैं। वह हज़ूर है, जो हुक्म करे। बाकी चिन्ता क्या करूँ! अधिक से अधिक बस यही कहेगा ना सूखा रोटला खाओ तो भी खायेंगे,

कहेगा 36 प्रकार का खाना खाओ तो भी खायेंगे। हमारे लिये दोनों बराबर हैं। ऐसे भी कई योगी होते हैं, गुफ़ा में रहते हैं, एक-एक मास पानी पर रहते हैं, कोई टाइम आयेगा तो हम भी पानी पर रह लेंगे।

4) समर्पित वह है जो कदम कदम श्रीमत के फरमान पर चलता है। यही हमारा धर्म है, मर्यादा है, श्रीमत ही आज्ञा है। तो बाबा की आज्ञा में सदैव चलो। मैं कदम-कदम श्रीमत पर चल रहा हूँ – इसका चार्ट नोट करो।

5) श्रीमत कहती है रोज़ मुरली सुनो, सवेरे उठो, ज्ञान-स्नान करो, मर्यादाओं में चलो, पवित्र रहो, ब्राह्मण कुल की लाज़ रखो। दूसरों की सर्विस करो, सभी को बाबा परिचय दो, सेवा करो यह सब श्रीमत है। अब बाबा ने हम सबको यही अन्तिम श्रीमत दी है कि बच्चे तुम्हारे जो पुराने संस्कार हैं, उन्हें खत्म करने के लिए याद की यात्रा में रहो। एकाग्रता का अभ्यास करो, अशरीरी बनो। यह अभ्यास कमी-कमजोरियों को खत्म करेगा।

6) हम समर्पित बच्चों के मुख से सदैव रत्न निकलने चाहिए, कभी कुवचन नहीं निकले। क्रोधमुक्त होकर रहो। दृष्टि वृत्ति सदा पावन रहे तो हर चलन से, बोल से बापदादा का नाम बाला कर सकेंगे।

7) समर्पित माना एक बाबा ही मेरा संसार है। बाकी न कोई मेरा, न कोई मेरी...। मेरे दिल में भी तू है, नयनों में भी तू है, सिर पर भी तू है... बांहों में भी तू है... तेरे सिवाए मेरा कोई नहीं। तुम्हीं से सुनूँ, तुम्हीं से बोलूँ, तुम्हीं से हर संबंध निभाऊँ...। ऐसा नष्टोमोहा, स्मृति स्वरूप रहने वाला ही अन्त समय के सेकण्ड के पेपर में पास विद आनर बन सकेगा।

समर्पित जीवन की कुछ विशेष निशानियाँ

1) समर्पित जीवन में सम्पूर्ण त्याग सम्पूर्णता को समीप लायेगा। हमारे लिए आराम हराम है इसलिए हमें साधन नहीं चाहिए, साधना करनी है। हमारी मुख्य धारणा है त्याग, तपस्या और सेवा। जितना मैं तपस्या करूँगी उतना औरों का कल्याण होगा। हमें देख दूसरे कापी करेंगे।

2) हमारे एक एक बोल को दूसरे नोट करते हैं, समझो हम कोई ऐसा बोल बोलती जो ईश्वरीय मर्यादा के विरुद्ध है तो दूसरों के भाग्य की रेखा को कट करने के निमित्त बन जाती क्योंकि हर एक मुझे कापी करता है। तो समर्पित आत्माओं पर विश्व के कल्याण का आधार है। एक एक आत्मा बाबा के साथ स्थापना के कार्य में बंधी हुई है। हम सारे विश्व को पावन बनाने की शक्ति देने के, शान्ति देने के निमित्त हैं। हम एक एक जवाबदार हैं। अगर हम अपने को जवाबदार समझेंगे तो अलबेलापन निकल जायेगा।

3) समर्पित जीवन में भले और कोई भी चिंता न हो, परन्तु अपनी उन्नति की चिंता सबको जरूर करनी है। यदि हमसे एक भी उल्टा कर्म होता है या मेरे प्रति किसी की वृत्तियों में भी गलत वायब्रेशन्स है तो वह सारे वातावरण को खराब कर देता है, इतनी हर एक की जवाबदारी है। चाहे हम चलते हैं, खाते हैं, घूमते हैं, कर्म करते हैं, चाहे सोते हैं, बहलते हैं, चिंतन करते हैं, परचिंतन करते हैं... इन सबका एक्शन, रिएक्शन जरूर होता है। अच्छा करते तो भी 100 गुणा रिटर्न है, अगर कोई गलत करते तो भी 100 गुणा दण्ड है।

4) समर्पित माना सम्पूर्ण ट्रस्टी तो ऐसी हमारी ट्रस्टी लाइफ हो, किसी भी चीज़ में आसक्ति न हो। थोड़ा भी किसी देहधारी से मोह न हो। खुद से अथवा दूसरों से हम नष्टोमोहा होकर रहें।

5) हम समय के पहले रुद्र बाबा पर पूरा-पूरा बलि चढ़ चुके हैं। बाबा कहते बच्चे अपना सब कुछ पुराना समर्पित कर दो तो मैं तुम्हें नया तन, नया मन और नया धन दूँ अर्थात् नई दुनिया में जब प्रकृति सतोप्रधान है तो वहाँ तुम्हारा सब कुछ नया होगा। तो देखना है कि हमने अपने पुराने संस्कारों की, स्वभावों की बलि चढ़ा दी है? मैं ऐसा कर्म कर रही हूँ जो दूसरा मुझसे प्रेरणा ले?

6) प्रवृत्ति वालों को तो कई प्रकार की प्रवृत्ति को देखना पड़ता, निभाना पड़ता, सम्भालना पड़ता। लेकिन जो समर्पित हैं वे उन बन्धनों से भी मुक्त हैं। हमारा तो जवाब है हम मुये मर गई दुनिया। हम बाबा तेरे पर बलिहार हो गये हैं। हमारे लिए दुनिया मरी पड़ी है। न हम दुनिया के हैं, न दुनिया हमारी है।

7) हम दुनिया को पैगाम देने वाले पैगम्बर हैं और कोई से किसी भी प्रकार का बंधन नहीं है। सभी को पैगाम देना, सन्देश देना...

बाबा ने हम बच्चों को यह सेवा की ड्यूटी दी है लेकिन स्व-उन्नति के लिए बाबा ने कहा है हे बच्चे, तुम हो बेहद के वैरागी, बेहद के त्यागी और बेहद के तपस्वी हो। तुम राजऋषि हो, तुम राजयोगी हो। एक बाबा के सिवाए तुम्हारा कोई नहीं। तुम बाबा के प्राण हो, बाबा तुम्हारे प्राण हैं और कोई नहीं।

8) हमारा दोस्त एक ही खुदा दोस्त है, हम आपस में दोस्त नहीं हैं। बाबा कहते अगर तुमने कोई को अपना पर्सनल दोस्त बनाता तो खुदा तुम्हारा दोस्त नहीं है। हम सब ईश्वरीय फैमिली के हैं, हमारा कोई पर्सनल दोस्त नहीं। हम देखती कि अगर कहीं कोई भी विघ्न पड़ता है तो विघ्न आने का पहला कारण है – दिल का दोस्त एक दो को बना देते हैं। चाहे कभी दिल की बातों की लेन-देन करना, चाहे दिल बहलाना, हंसी मजाक करना, यह सब सिद्ध करता है कि उनका दिलवर खुदा दोस्त नहीं है।

9) समर्पित का अर्थ ही है सर्वश त्यागी। समर्पित माना ही पुरानी दुनिया से वैरागी और पक्के सन्यासी, पक्के त्यागी, पक्के तपस्वी। ऐसे समर्पित बच्चे ही 'विजयी माला' के विजयी रत्न हैं, विजयी रत्न थे इसलिए अभी 'विजयी रत्न' बनके ही जाना है क्योंकि बार-बार दिल में यह जरूर आता कि अब घर जाना है!

10) ऐसा अपना बैलेन्स शीट क्लीयर करो - जो धर्मराज भी फूलों से स्वागत करके, सलाम करके वतन में भेजे। सभी बाबा के ज्ञानी तू आत्मा बच्चे अपना बैलेन्स सीट ऐसा बनाओ जो धर्मराज दिल से खातिरी करे। यह नहीं कि देख तुमने यह गलती किया, यह तू भोग - तो यह सब यहाँ खत्म करके जाओ।

11) हमारा रिमार्क है कि अन्त में बाबा बांहे पसार कर कहे आओ बच्चे आओ, ऐसे गले लगाकर वतन में भेज दे, ऐसी स्थिति बनानी है। दिल कहे 100 प्रतिशत हमारा यह रिकार्ड हो। बाबा की श्रीमत अनुसार हमारा मन-वचन-कर्म हो। बाबा हमें सर्टीफिकेट दे कि यह संस्कारों से, संकल्पों से, दृष्टि, वृत्ति सभी से पास विद ऑनर है। ऐसी कमाल करो तब कहेंगे समर्पित। ऐसी कमाल नहीं किया तो समर्पित क्या हुआ!

12) हमारी संगमयुग की यह लाइफ बहुत वैल्युबुल है। जितना-जितना हम अपने जीवन में वैल्युज धारण करते उतना वैल्युबुल बनते हैं। जैसे 56 गुण गाये जाते, ऐसे 56 अवगुण भी हैं। इसकी भी लिस्ट बनाओ। जैसे ईर्ष्या है, आवेश है... इनके भी बहुत बाल बच्चे हैं। तो देखो कितने गुणों की माला मैंने धारण की है और अभी तक कितने अवगुण रहे हुए हैं? ऐसे ही बाबा ने हर मुरली में स्वमान दिये हैं, वरदान दिये हैं वह भी लिखो और चेक करो कि कौन-कौन से वरदान मैंने बाबा से लिये हैं और किस वरदान की कमी मेरे में है? उसका कारण और निवारण निकालो। जब ऐसी सम्पूर्ण चेकिंग हो तब कहेंगे सम्पूर्ण समर्पित।